ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department - History - Subsidiary
2 - 05 - 2020 B.A.I - [2019 - 20]
Dr. Satyajeet Sarang No-7392488881

:- Notes

3. वैदिक सभ्यता :- सिन्धु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिए इस काल को हम वैदिक काल के नाम से जानते हैं।

★ यह सभ्यता अपनी पूर्ववर्ती हड़प्पा सभ्यता से काफी भिन्न थी। इस सभ्यता के संस्थापक आर्य थे इसलिए कभी-कभी इसे आर्य सभ्यता भी कहा जाता है यहाँ आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, उत्तम, उदात्त, अभिजात्य, कुलीन, उत्कृष्ट एवं स्वतन्त्र आदि।

ऋग्वैदिक काल [1500 ई०पू० - 1000 ई०पू०]

सिन्धु सभ्यता के विपरीत वैदिक सभ्यता मूलतः ग्रामीण थी। आर्यों का आरम्भिक जीवन मुख्यतः पशुचारण का था, कृषि उनका गौण धन्धा था।

★ आर्य लोग स्थाई या स्थिर निवासी नहीं थे इसलिए अपने पीछे कोई ठोस भौतिक अवशेष नहीं छोड़ गये।

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

छोड़ गयें।

★ वेदों की संख्या

1. ऋग्वेद (सर्वाधिक प्राचीन) :- यह सूक्तों का संग्रह है।
2. यजुर्वेद :- यज्ञ संबंधी सूक्तों का संग्रह है।
3. सामवेद :- गीतों का संग्रह है, इसके अधिकांश गीत ऋग्वेद से लिये गये है।
4. अथर्ववेद :- तंत्र मंत्रों का संग्रह है।

ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा सामवेद को 'वेदत्रयी' कहा जाता है।

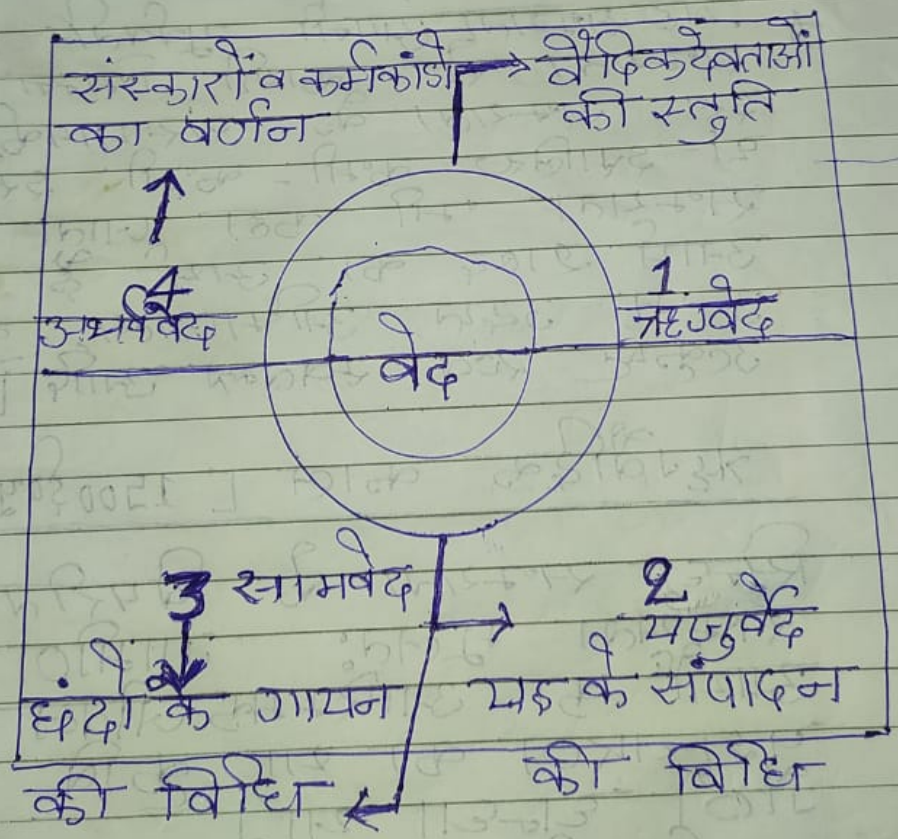

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

Date
Page

वैदिक साहित्य के स्त्रोत :-

वैदिक साहित्य से तात्पर्य चारों वेद, विभिन्न ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक एवं उपनिषदों से है। उपवेद अत्यंत परवर्ती होने के कारण वैदिक साहित्य के अंग नहीं माने जाते। इनको उत्तर वैदिक साहित्य के अंतर्गत रखा जाता है। वैदिक साहित्य श्रुति नाम से विख्यात है। श्रुति का अर्थ सुनकर लिखा हुआ साहित्य है।

★ यह वह साहित्य है जो मनुष्यों द्वारा लिखा नहीं गया अपितु जिन्हें ईश्वर ने ऋषियों को आत्म ज्ञान देकर उनकी सृष्टि की है तथा ऋषियों द्वारा यह कई पीढ़ियों तक अन्य ऋषियों को मिलता रहा। इसी कारण वैदिक साहित्य को अपौरुषेय और नित्य कहा जाता है. पहले के 3 वेदों (1) ऋग्वेद (2) सामवेद व (3) यजुर्वेद) को वेदत्रयी कहा जाता है।

अथर्ववेद इसमें सम्मिलित नहीं है क्योंकि इसमें यज्ञ से भिन्न लौकिक विषयों का वर्णन है।

[1.] ऋग्वेद

★ इसमें विभिन्न देवताओं की स्तुति में मंत्रों का संग्रह है।

REDMI NOTE 8
48MP QUAD CAMERA

ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department - History - Subsidiary
2-05-2020 B.A.I - [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang No 7392488881

— NOTES

3. वैदिक सभ्यता :- सिन्धु सभ्यता के पतन के बाद जो नवीन संस्कृति प्रकाश में आई उसके विषय में हमें सम्पूर्ण जानकारी वेदों से मिलती है। इसलिए इस काल को हम वैदिक काल के नाम से जानते हैं।

★ यह सभ्यता अपनी पूर्ववर्ती हड़प्पा सभ्यता से काफी भिन्न थी। इस सभ्यता के संस्थापक आर्य थे इसलिए कभी-कभी इसे आर्य सभ्यता भी कहा जाता है यहाँ आर्य शब्द का अर्थ है श्रेष्ठ, उत्तम, उदात्त, अभिजात्य, कुलीन, उत्कृष्ट एवं स्वतन्त्र आदि।

ऋग्वैदिक काल [1500 ई०पू० - 1000 ई०पू०]

सिन्धु सभ्यता के विपरीत वैदिक सभ्यता मूलतः ग्रामीण थी। आर्यो का आरम्भिक जीवन मुख्यतः पशुचारण का था, कृषि उनका गौण धन्धा था।

★ आर्य लोग स्थाई या स्थिर निवासी नहीं थे इसलिए अपने पीछे कोई ठोस भौतिक अवशेष नहीं छोड़ गये।